डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

सा. अका./ 100

10 फ़रवरी 2020

गिरिराज किशोर को साहित्य अकादेमी परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार, नाटककार और आलोचक गिरिराज किशोर का रविवार, दिनांक 9 फ़रवरी 2020 की सुबह कानपुर में हृदय गति रुकने से निधन हो गया। वह 83 वर्ष के थे। 8 जुलाई, 1937 को जन्मे गिरिराज किशोर ने अपने सशक्त लेखन से हिंदी साहित्य जगत् में पर्याप्त ख्याति अर्जित की। गिरिराज किशोर की रचनाओं में समकालीन जीवन को समझने के सूत्र प्राप्त होते हैं जो जीवन–जगत् के भविष्य को भी इंगित करते हैं। सामयिकता से भरपूर तथा समय का अतिक्रम करने की यह क्षमता गिरिराज किशोर के सृजन को महत्त्वपूर्ण बनाती है। गिरिराज किशोर ने अपने लेखन में उन तथाकथित अदृश्य आधुनिक कारकों को भी प्रतीकात्मक ढंग से उल्लिखित किया, जो मनुष्य और समाज की विषम अंतर्क्रिया के फलस्वरूप सांस्कृतिक विडंबना के कारक बनते हैं। उनके उपन्यास 'ढाई घर' को वर्ष 1992 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। गिरिराज किशोर द्वारा लिखे गए 'पहला गिरमिटिया' और 'बा' उपन्यासों ने इन्हें विशेष पहचान दिलाई थी। उनके उपन्यासों – 'लोग', 'जुगलबंदी', 'परिशिष्ट', 'इंद्र सुनें', 'दो यात्राएँ', 'यथा प्रस्तावित', 'चिड़ियाघर', 'असलाह'; कहानी–संग्रहों – 'पेपरवेट', 'नीम के फूल', 'चार मोती बेआब', 'शहर दर शहर', 'हम प्यार कर लें'; और नाटकों – 'प्रजा ही रहने दो', 'नरमेध', 'घास और घोड़ा', 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे' आदि रचनाओं ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। गिरिराज किशोर प्रतिष्ठित त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका 'अकार' के संपादक भी रहे।

वह वर्ष 2003 से 2007 तक साहित्य अकादेमी की कार्यकारिणी के सदस्य और हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक भी रहे थे। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने उन्हें एमेरिट्स फैलोशिप से अलंकृत किया था। उन्हें छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा डी.लिट. की मानद् उपाधि दी गई थी। वह भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के फैलो रहे। भारत सरकार के प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित गिरिराज किशोर को व्यास सम्मान, गाँधी सम्मान, भारतीय भाषा परिषद् सम्मान, साहित्य भूषण, वीरदेवजू सम्मान, भारतेंदु सम्मान आदि पुरस्कारों से भी अलंकृत किया गया था।

साहित्य अकादेमी गिरिराज किशोर के निधन से अत्यंत आहत है। उनके देहावसान से साहित्य जगत् को अपूरणीय क्षति हुई है। अकादेमी परिवार गिरिराज किशोर के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि निवेदित करती है।

(के. श्रीनिवासराव)